ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

कोटा जिले के माध्यमिक स्तर पर अनुत्तीर्ण रहने वाले विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Study of Intelligence Quotient and Family Environment of Students Who Failed Secondary Level in Kota District

Paper Submission: 11/11/2021, Date of Acceptance: 21/11/2021, Date of Publication:23/11/2021

सुरेश चन्द्र मालव
शोध छात्र,
शिक्षाशास्त्र विभाग
कैरियर पॉइन्ट यूनिवर्सिटी,
कोटा, राजस्थान, भारत

अनामिका राठौर
प्राचार्या,
शोध पर्यवेक्षक
चिल्ड्रन टी.टी. कॉलेज,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में कोटा जिले के माध्यमिक स्तर पर अनुत्तीर्ण रहने वाले विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि शहरी व ग्रामीण विद्यालयांे के अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण का अध्ययन किया जाए तो ये दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं या नहीं। अतः उपरोक्त से शोधकार्य की उपयोगिता, महत्व, अनिवार्यता तथा औचित्य स्पष्ट हो जाता है।

शहरी व ग्रामीण छात्रों के बीच सिर्फ विकास या दिमाग का ही नहीं, अपितु प्रारम्भिक वातावरण कौशल, सीखने की क्षमता, बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता और विभिन्न सुविधाओं की पहुँच एक बड़ा अन्तर है।

प्रस्तुत अध्ययन में कोटा जिले के सुल्तानपुर, इटावा व कोटा शहरी क्षेत्र के 12 राजकीय व निजी माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है। कक्षा 10 के बालकों को ही न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है, जो यादृच्छिक विधि से चुने गए हैं। अध्ययन में पाया गया है कि छात्रों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिन बालकों की बुद्धिलब्धि तथा वातावरण विद्यार्थियों के अनुकूल हैं उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होगी तथा माध्यमिक स्तर पर अनुत्तीर्ण रहने वाले विद्यार्थियों की संख्या में कमी की जा सकती है तथा उन्हें अनुकूल वातावरण प्रदान करके अधिक से अधिक सफलता दिलायी जा सकती है।

In the present research paper, a comparative study of the intelligence and family environment of the students who failed at the secondary level of Kota district has been done. It is known from the study that if we study the intelligence and family environment of the students who failed the urban and rural schools, then these two affect each other or not. Therefore, the usefulness, importance, necessity and justification of research work becomes clear from the above.

There is a big difference between urban and rural students not only of development or mind, but also of early environment, skills, learning capacity, availability of infrastructure and access to various facilities.

In the present study, 12 government and private secondary and higher secondary schools of Sultanpur, Etawah and Kota urban areas of Kota district have been taken. Only the boys of class 10 have been included as a sample, which are selected at random. It has been found in the study that both the intelligence of the students and the family environment are two sides of the same coin. Children whose intelligence and environment are conducive to the students, their academic achievement will be high and the number of students failing at the secondary level can be reduced and maximum success can be achieved by providing them with a conducive environment.

मुख्य शब्द माध्यमिक स्तर अनुत्तीर्ण विद्यार्थी बुद्धिलब्धि पारिवारिक वातावरण
Keywords Secondary Level Failed Student Intelligence Family Environment.

प्रस्तावना

विद्यार्थी राष्ट्र के भावी करणधार हैं। विद्यार्थी के मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य पर अधिकाधिक ध्यान प्रत्येक परिवार व राष्ट्र का कत्र्तव्य है। बच्चे उपयुक्त वातावरण में पले, पढ़े व आगे बढ़े। वर्तमान में बालक का पीछे रहना राष्ट्र की बहुत बड़ी क्षति है। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी की प्रगति नहीं होना, अनुत्तीर्ण हो जाना आदि के कई कारण जाते हैं-स्वयं के प्रयत्न का अभाव, पारिवारिक स्थिति का ठीक नहीं होना, विद्यार्थी के परिवार का वातावरण अनुकूल नहीं होना, उसमें सोचने-समझने की शक्ति का कम होना, अधिगम की कमी, स्वाध्याय आदतो की कमी आदि ऐसे कई कारण हैं जिससे विद्यार्थी का शैक्षणिक विकास नहीं हो पाता है। बालक जन्म से ही कुछ सहज योग्यताएँ लेकर उपयुक्त उद्दीपन नहीं प्रदान किया जाता है। तो वे योग्यताएँ अपने प्रदत्त स्वरूप में विकसित होती है। बालक का अधिकांश समय परिवार के साथ व्यतीत होता है तथा घर उसकी प्रथम पाठशाला होती है, जहाँ से सीखना प्रारम्भ

करता है ऐसी अवस्था में यदि उसके लिए उपयुक्त पारिवारिक वातावरण न बनाया जाए तो बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता तथा विद्यार्थी जीवन में वह उच्च उपलब्धियो को प्राप्त नहीं कर सकता।

संक्रियात्मक शब्दावली

बुद्धिलब्धि ब्लण्ड्स एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन के अनुसार - ''जनसंख्या का दो-तिहाई भाग औसत के आस-पास 85 से 115 बुद्धिलब्धि के मध्य होता है। इन्हें बुद्धिलब्धि की दृष्टि से सामान्य श्रेणी में रखा गया।
कील एवं ब्रूस के अनुसार - ''बुद्धिलब्धि यह बतातली है कि बालक की मानसिक योग्यता में किस गति से विकास हो रहा है।''

पारिवारिक वातावरण

डॉ. मजूमदार के अनुसार परिवार की परिभाषा इस प्रकार है -''परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक मकान में रहते हैं और जिनमें रक्त का सम्बन्ध होता है, परिवार की उन समस्त सामाजिक, भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों एवं उनके जीवन, व्यवहार, स्वभाव, अभिवृत्ति, विकास, उपलब्धि तथा प्रेरणा पर प्रकाश डालता है।''

अनुत्तीर्ण विद्यार्थी एवं शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तुत शोध में अनुत्तीर्ण वे हैं जो पिछले वर्ष दसवीं कक्षा की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए, जिन्होंने बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षा में 36 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त किए हैं। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में किशोरावस्था के बालकों पर बढ़ते तनाव व दवाब के कारण उसके परीक्षा परिणामों पर दुष्प्रभाव पड़ता है, असफलता उन्हें कहीं का नहीं रखती, जिससे उनके मस्तिष्क में अनेक विचारों का द्वन्द्व होता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर बुरा प्रभाव पड़ता है और उनकी बुद्धिलब्धि प्रभावित होती है, इसलिए बालकों की बुद्धिलब्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले वातावरण के प्रभाव पर अध्ययन किया गया।

साहित्यावलोकन

1. निधि बाला (2005) - ने माता-पिता के व्यवसाय व पारिवारिक आय का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध विषय पर अध्ययन किया।
2. सैनी एस. (20010) - माता के कामकाजी व गैर कामकाजी होने का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
3. मुरली (2015) - विभिन्न श्रेणियों के विकलांग बालकांे की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।
4. सरोज आनन्द एवं सुमनलता (2019) -अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार छात्रों के प्रत्यक्षीकृत माता-पिता के व्यवहार दुश्चिन्ता एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
5. मोहम्मद क्यूम (2020) - ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों के विद्यार्थियों की तुलना में शैक्षिक उपलब्धियों में उच्च पाए जाते है।
6. समस्या कथन:- कोटा जिले के माध्यमिक स्तर पर अनुत्तीर्ण रहने वाले विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना।
2. अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना।
3. अनुत्तीर्णछात्राओं की बुद्धिलब्धि का पता लगाना।
4. अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं की बुद्धिलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु कोटा जिले के सुल्तानपुर, इटावा तथा कोटा शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं का चयन किया गया, जो 10 वीं कक्षा में 2020 की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए हैं।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में दो मानकीकृत उपकरणां का प्रयोग किया गया है -

1. इसमें डॉ. श्याम स्वरूप जलोटा सामूहिक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया है।
2. डॉ. जी.पी. शैरी तथा डॉ. जगदीश चन्द्र सिन्हा द्वारा निर्मित पारिवारिक संबंध मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

शोधकर्ता ने कोटा जिले के ग्रामीण (सुल्तानपुर, ईटावा) एवं शहरी क्षेत्र (कोटा) के राजकीय एवं अराजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक 12 विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का चयन जनसंख्या के रूप में किया है।

प्रस्तुत शोधकार्य के चयन के लिए माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 10 में कुल अनुत्तीर्ण 720 विद्यार्थियों में से 240 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया, जिनमें माध्यमिक विद्यालय के 120 विद्यार्थी शहरी तथा 120 विद्यार्थी ग्रामीण सम्मलित किये गये हैं।

शोध में प्रयुक्त चर

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नानुसार चरों का प्रयोग किया गया है -

1. स्वतंत्र चर - बुद्धिलब्धि एवं पारिवारिक वातावरण।
2. परतन्त्र चर - ग्रामीण व शहरी अनुत्तीर्ण विद्यार्थी

प्रदत्त विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम

समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना - समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि ज्ञात कर निम्न तालिका में विश्लेषण किया गया है।

सारणी - 1

समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीकरण	समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण	
	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान	41	17-08
अत्युत्तम	31	12-91
उत्तम	30	12-50
तीव्र	26	10-84
औसत	35	14-58
कम कुशल	50	20-84
मंद	27	11-25
योग	240	100

समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का प्रतिशवार विवरण इस प्रकार है -

1. प्रतिभावान 17.08 प्रतिशत विद्यार्थी, 12.91 प्रतिशत अत्युतम, 12.5 प्रतिशत उत्तम, 10.84 प्रतिशत तीव्र बुद्धि के एवं 14.58 प्रतिशत औसत बुद्धि के विद्यार्थी पाए गए।
2. अधिकांश कम कुशल बुद्धि के 20.84 प्रतिशत विद्यार्थी पाए गए।
3. मंद बुद्धि के 11.25 प्रतिशत विद्यार्थी पाए गए।

अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना

अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि ज्ञात कर निम्न तालिका में विश्लेषण किया गया है।

सारणी-2

अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीकरण	अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण	
	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान	21	17-50
अत्युत्तम	15	12-50
उत्तम	12	10-00
तीव्र	11	9-17
औसत	17	14-17
म कुशल	28	23-33
मंद	16	13-33
योग	120	100

अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि का प्रतिशवार विवरण इस प्रकार है -

1. प्रतिभावान 17.50 प्रतिशत छात्र, 12.50 प्रतिशत अत्युतम, 10.00 प्रतिशत उत्तम, 9.17 प्रतिशत तीव्र बुद्धि के एवं 14.17 प्रतिशत औसत बुद्धि के छात्र पाए गए।
2. अधिकांश कम कुशल बुद्धि के 23.33 प्रतिशत छात्र पाए गए।
3. मंद बुद्धि के 13.33 प्रतिशत छात्र पाए गए।

अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का पता लगाना

अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि ज्ञात कर निम्न तालिका में विश्लेषण किया गया है।

सारणी-3

अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीकरण	अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण	
	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान	20	16-67
अत्युत्तम	16	13-33
उत्तम	18	15-00
तीव्र	15	12-50
औसत	18	15-00
कुशल	22	18-33
मंद	11	9-17
योग	120	100

अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का प्रतिशवार विवरण इस प्रकार है -

1. प्रतिभावान 16.67 प्रतिशत छात्राएँ, 13.33 प्रतिशत अत्युतम, 15 प्रतिशत उत्तम, 12.5 प्रतिशत तीव्र बुद्धि के एवं 15 प्रतिशत औसत बुद्धि की छात्राएँ पाए गए।
2. अधिकांश कम कुशल बुद्धि की 18.33 प्रतिशत छात्राएँ पाई गई।
3. मंद बुद्धि की 9.17 प्रतिशत छात्राएँ पाई गई।

अनुत्तीर्ण छात्र एवं छात्राओं की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण

अनुत्तीर्ण छात्र एवं छात्राओं की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण सारणी-4 में प्रस्तुत किया जा रहा है।

सारणी-4

अनुत्तीर्ण छात्र एवं छात्राओं की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीकरण	छात्रों की बुद्धिलब्धि		छात्राओं की बुद्धिलब्धि	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान	21	17-50	20	16-67
अत्युत्तम	15	12-50	16	13-33
उत्तम	12	10-00	18	15-00
तीव्र	11	9-17	15	12-50
औसत	17	14-17	18	15-00
कम कुशल	28	23-33	22	18-33
मंद	16	13-33	11	9-17
योग	120	100	120	100

उपरोक्त सारणी से निम्न परिणाम परिलक्षित होते है-

1. अनुत्तीर्ण छात्रों (120) तथा छात्राएँ (120) में क्रमशः 17.50 प्रतिशत छात्र एवं 16.67 प्रतिशत छात्राएँ प्रतिभावान, 12.5 प्रतिशत छात्र एवं 13.33 प्रतिशत छात्राएँ अत्युत्तम, 10.00 प्रतिशत छात्र एवं 15.00 प्रतिशत छात्राएँ उत्तम बुद्धि के, 9.17 प्रतिशत छात्र एवं 12.50 प्रतिशत छात्राएँ तीव्र बुद्धि के तथा 14.17 प्रतिशत छात्र एवं 15.00 प्रतिशत छात्राएँ औसत बुद्धि के पाए गए।

2. छात्रों में कम कुशल बुद्धिलब्धि के छात्र 23.33 प्रतिशत एवं मंद बुद्धि के छात्र 13.33 प्रतिशत पाए गए, जबकि छात्राओं में कम कुशल बुद्धिलब्धि की छात्राएँ 18.33 प्रतिशत एवं मंद बुद्धि की छात्राएँ 9.17 प्रतिशत छात्राएँ पाई गई।

परिणाम

1. उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि अनुत्तीर्ण विद्यार्थी बुद्धिलब्धि की दृष्टि से कमजोर पाये गये, छात्रों की बुद्धिलब्धिछात्राओं से ठीक पाई गई।
2. अत्युत्तम बुद्धिलब्धि में छात्रों की संख्याछात्राओं से अधिक पाई गई।
3. तीव्र एवं औसत बुद्धिलब्धि में छात्रों की संख्याछात्राओं से अधिक पाई गई।
4. अधिकांश अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं की बुद्धिलब्धि कम कुशल अथवा मंद पाई गई।
5. कम कुशल एवं मंद बुद्धिलब्धि की श्रेणी मेंछात्राओं की संख्या छात्रों से अधिक पाई गई।

अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के मध्यमान के आधार पर विश्लेषण सारणी-5 में प्रस्तुत किया जा रहा है।

सारणी-5

अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का क्षेत्रवार मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्षेत्र	कथनों की संख्या	छात्र		छात्राएँ	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन
माता स्वीकारोक्ति	27	15-63	3-61	16-38	2-90
पिता स्वीकारोक्ति	25	15-63	3-49	15-06	2-98
माता एकाग्रता	21	12-20	2-57	12-28	2-64
पिता एकाग्रता	20	11-03	3-01	10-71	3-00
माता अस्वीकारोक्ति	31	14-82	4-51	14-38	4-54
पिता अस्वीकारोक्ति	26	12-41	4-17	12-21	4-53
योग	**150**	81-61	11-36	81-00	11-95

उपरोक्त सारणी से निम्न परिणाम परिलक्षित होते हैः-

पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 1 माता स्वीकारोक्ति पर अनुत्तीर्ण छात्र तथाछात्राओं का मध्यमान क्रमशः 15.63 तथा 16.38 तथा मानक विचलन 3.61 तथा 2.90 प्राप्त हुआ। पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के इस क्षेत्र के 27 कथनों पर व्यक्त राय के प्राप्तांकों के मध्यमान पर माता स्वीकारोक्ति छात्रों की अपेक्षाछात्राओं में अधिक पाई गई। अनुत्तीर्ण छात्राओं की माताएँ अपने पुत्रियों को छात्रों की अपेक्षा अधिक स्वीकार करती है।

पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 2 पिता स्वीकारोक्ति पर अनुत्तीर्ण छात्र तथा छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 15.53 तथा 15.06 तथा मानक विचलन 3.49 तथा 2.98 प्राप्त हुआ। पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के इस क्षेत्र के 25 कथनों पर व्यक्त राय के प्राप्तांकों के मध्यमान पर पिता स्वीकारोक्ति छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक पाई गई। पिताओं की स्वीकारोक्ति छात्रों के प्रति अधिक पाई गई।

पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 3 माता एकाग्रता पर अनुत्तीर्ण छात्र तथाछात्राओं का मध्यमान क्रमशः 12.20 तथा 12.28 तथा मानक विचलन 2.57 तथा 2.64 प्राप्त हुआ। पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के इस क्षेत्र के 21 कथनों पर व्यक्त का प्राप्तांकों का मध्यमान पर माता एकाग्रता छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में अधिक पाई गई।

पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 4 पिता एकाग्रता पर अनुत्तीर्ण छात्र तथा छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 11.03 तथा 10.71 तथा मानक विचलन 3.01 तथ 3.00 प्राप्त हुआ। पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के इस क्षेत्र के 20 कथनांे पर व्यक्त राय केप्राप्तांकों के मध्यमान पर पिता एकाग्रताछात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक पाई गई।

पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 5 माता अस्वीकारोक्ति पर अनुत्तीर्ण छात्र तथाछात्राओं का मध्यमान क्रमशः 14.82 तथा 14.38 तथा मानक विचलन 4.51 तथा 4.54 प्राप्त हुआ। पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के इस क्षेत्र के 31 कथनों पर व्यक्त राय के प्राप्तांकों के मध्यमान पर माता अस्वीकारोक्तिछात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक पाई गई।

पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 6 पिता अस्वीकारोक्ति पर अनुत्तीर्ण छात्र तथा छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 12.41 तथा 12.21 तथा मानक विचलन 4.17 तथा 4.53 प्राप्त हुआ। पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के इस क्षेत्र के 26 कथनों पर व्यक्त राय के प्राप्तांकों के मध्यमान पर पिता

अस्वीकारोक्ति छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक पाई गई। न्यादर्श अनुत्तीर्ण छात्रों पर पिता अधिक अस्वीकारोक्ति रखते है।

पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के सभी क्षेत्रों पर अनुत्तीर्ण छात्र तथाछात्राओं का मध्यमान क्रमशः 81.61 तथा 81.00 मानक विचलन 11.36 तथा 11.95 प्राप्त हुआ। पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के सभी क्षेत्रों के 150 कथनों पर व्यक्त राय के प्राप्तांकों के मध्यमान पर सभी क्षेत्रों मेंछात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक पाया गया।

अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक विश्लेषण

अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण सारणी 6 में प्रस्तुत किया जा रहा है -

सारणी क्रमांक 6

अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक विश्लेष

क्षेत्र	छात्र		छात्राएँ		टी-मान	0.05/0.01 स्तर पर सार्थकता
	मध्यमान	मानक विचलन मध्यमान	मध्यमान	मानक विचलन		
माता स्वीकारोक्ति	15-63	3-61	16-38	2-90	1-77	सार्थक नहीं
पिता स्वीकारोक्ति	15-53	3-49	15-06	2-98	0-72	सार्थक नहीं
माता एकाग्रता	12-20	2-57	12-28	2-64	0-14	सार्थक नहीं
पिता एकाग्रता	11-30	3-01	10-71	3-00	0-54	सार्थक नहीं
माता अस्वीकारोक्ति	14-82	4-52	14-38	4-54	0-49	सार्थक नहीं
पिता अस्वीकारोक्ति	12-41	4-17	12-21	4-53	0-23	सार्थक नहीं
योग	81-61	11-36	81-00	11-85	0-26	सार्थक नहीं

स्वतन्त्रता के अंश 238 पर 0.05 स्तर का मान = 1.97 0.01 स्तर का मान = 2.6

उक्त सारणी अनुसार अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक विश्लेषण करने पर पाया गया कि सभी क्षेत्रों पर अनुत्तीर्ण छात्र एवंछात्राओं के टी-मान, सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.97 एवं सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.60 दोनों से ही कम है।

अतः परिकल्पना "माध्यमिक विद्यालय में अनुत्तीर्ण होने वाले छात्र-छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होता है।" स्वीकृत की जाती है।

अर्थात दोनों समूहों (छात्र एवं छात्राएँ) पर माता स्वीकारोक्ति, पिता स्वीकारोक्ति, माता एकाग्रता, पिता एकाग्रता, माता अस्वीकारोक्ति, पिता अस्वीकारोक्ति एक समान है।

अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए निर्देशन कार्यक्रम

1. विद्यार्थियों के माता-पिता की अस्वीकारोक्ति विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है। बच्चो के साथ पारिवारिक सम्बधो को माता-पिता को ध्यान में रखना चाहिये। माँ बालक की प्रथम पाठशाला होती है, माता-पिता अपने बच्चो की परवरिश पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। बच्चो को माता-पिता बच्चो को कष्टित न करें, इसके लिए ऐसे बच्चो के माता-पिता को समय-समय पर प्राचार्य को विद्यालयों में अभिभावक बैठक में बुलाकर अपने बच्चो के लालन-पालन में आने वाली कमी तथा उसके परिणामों से अवगत कराना चाहिये।
2. माता-पिता को बुद्धि परीक्षण तथा अन्य साधनों से यह पता लगाना चाहिये कि क्या उनकी संतान कम बुद्धिलब्धि की है ? प्रस्तुत शोध में उत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि सामान्य तथा सामान्य से कम पाई गई, उनके कारणों का माता-पिता को पता लगना चाहिये। विद्यालय के शिक्षकों को भी बुद्धिलब्धि कम होने के कारणों का पता लगाकर अभिभावक को अवगत करना चाहिये।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत शोध माध्यमिक विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों पर किया गया, इसी तरह इन्हीं चरों अथवा अन्य चरों को लेकर प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों पर भी शोधकार्य किया जा सकता है।
2. इसी तरह का शोधकार्य शासकीय तथा निजी विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों को लेकर किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श बहुत सीमित है, इसी तरह का शोध बड़े न्यादर्श को लेकर किया जा सकता है।
4. शोधकत्र्ता ने समयाभाव के कारण अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के बुद्धिलब्धि एवं पारिवारिक समस्याओं का ही अध्ययन किया। इस अध्ययन को ओर विस्तार से अन्य घटकांे शारीरिक घटक, अधिगम कठिनाईयों से सम्बन्धित घटकों तथा अधिक न्यादर्श पर करने की आवश्यकता है।
5. अनुत्तीर्ण किशोर विद्यार्थियों के अध्ययन आदते एवं मनोवृत्ति, शैक्षिक दुश्चिंताआंे शैक्षिक रूचियों, उपलब्धि प्रेरणा, स्वधारणा, सुरक्षा-असुरक्षा, समायोजन, स्वभावगत विशेषताओं आदि पर शोध कार्य किया जा सकता है।
6. कुछ विद्यार्थियों पर गहन अध्ययन के लिए केस स्टडी की जा सकती है।

निष्कर्ष

शोधकार्य में शोध निष्कर्षों को दो भागों में प्रयुक्त किया है

बुद्धिलब्धि के आधार पर

1. अनुत्तीर्ण विद्यार्थी बुद्धिलब्धि की दृष्टि से कमजोर पाये गये, छात्रों की बुद्धिलब्धि छात्राओं से ठीक पाई गई।
2. अत्युत्तम बुद्धिलब्धि में छात्रों की संख्याछात्राओं से अधिक पाई गई।
3. तीव्र एवं औसत बुद्धिलब्धि में छात्रों की संख्याछात्राओं से अधिक पाई गई।
4. अधिकांश अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं की बुद्धिलब्धि कम कुशल अथवा मंद पाई गई।
5. कम कुशल एवं मंद बुद्धिलब्धि की श्रेणी मेंछात्राओं की संख्या छात्रों से अधिक पाई गई।
6. शहरी एवं ग्रामीण दोनों समूहों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थी बुद्धिलब्धि की दृष्टि से कमजोर पाये गये, शहरी विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि ग्रामीण विद्यार्थियों से ठीक पाई गई।
7. अत्युत्तम बुद्धिलब्धि में शहरी विद्यार्थियों की संख्या ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक पाई गई।
8. तीव्र एवं औसत बुद्धिलब्धि में शहरी विद्यार्थियों की संख्या ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक पाई गई।
9. कम कुशल बुद्धिलब्धि की श्रेणी में शहरी विद्यार्थियों की संख्या अधिक पाई गई जबकि मंद बुद्धिलब्धि की श्रेणी में ग्रामीण विद्यार्थियों की संख्या अधिक पाई गई।
10. शहरी एवं ग्रामीण दोनों समूहों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थी बुद्धिलब्धि की दृष्टि से कमजोर पाये गये, शहरी विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि ग्रामीण विद्यार्थियों से ठीक पाई गई।
11. अत्युत्तम बुद्धिलब्धि में शहरी विद्यार्थियों की संख्या ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक पाई गई।
12. तीव्र एवं औसत बुद्धिलब्धि में शहरी विद्यार्थियों की संख्या ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक पाई गई।
13. कम कुशल बुद्धिलब्धि की श्रेणी में शहरी विद्यार्थियों की संख्या अधिक पाई गई जबकि मंद बुद्धिलब्धि की श्रेणी में ग्रामीण विद्यार्थियों की संख्या अधिक पाई गई।
14. छात्र एवं छात्राएँ दोनों समूहों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थी बुद्धिलब्धि की दृष्टि से कमजोर पाये गये, शहरी विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि ग्रामीण विद्यार्थियों से ठीक पाई गई।
15. अत्युत्तम बुद्धिलब्धि में शहरी विद्यार्थियों की संख्या ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक पाई गई।
16. तीव्र एवं औसत बुद्धिलब्धि में शहरी विद्यार्थियों की संख्या ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक पाई गई।
17. कम कुशल बुद्धिलब्धि की श्रेणी में शहरी विद्यार्थियों की संख्या अधिक पाई गई जबकि मंद बुद्धिलब्धि की श्रेणी में ग्रामीण विद्यार्थियों की संख्या अधिक पाई गई।

पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के कथनांे पर व्यक्त राय पर मध्यमान के आधार पर

1. पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 1 माता स्वीकारोक्ति पर व्यक्त राय के आधार पर छात्र-छात्राओं के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। लेकिन माता स्वीकारोक्ति क्षेत्र पर छात्राओं का मध्यमान छात्रों की अपेक्षा अधिक पाया गया।
2. पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 2 पिता स्वीकारोक्ति पर व्यक्त राय के आधार पर छात्र-छात्राओं के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इस क्षेत्र पर छात्रों का मध्यमानछात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया।
3. माता एकाग्रता क्षेत्र पर दोनों समूहों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। माता एकाग्रता क्षेत्र परछात्राओं का मध्यमान छात्रों से अधिक पाया गया।
4. पिता एकाग्रता क्षेत्र पर दोनों समूहों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। पिता एकाग्रता क्षेत्र पर छात्रों का मध्यमानछात्राओं से अधिक पाया गया।

5. माता अस्वीकारोक्ति क्षेत्र पर व्यक्त राय के आधार पर छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों पर प्राप्त मध्यमान में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। माता अस्वीकारोक्ति क्षेत्र पर छात्रों का मध्यमान छात्राओं से अधिक पाया गया।
6. पिता अस्वीकारोक्ति पर व्यक्त राय के आधार पर छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों पर प्राप्त मध्यमान का अन्तर सार्थक नहीं पाया गया। पिता अस्वीकारोक्ति क्षेत्र पर छात्रों का मध्यमानछात्राओं से अधिक पाया गया।
7. पारिवारिक सम्बन्ध सूची के समग्र क्षेत्रों पर व्यक्त राय के आधार पर छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों पर प्राप्त मध्यमान का अंतर सार्थक नहीं पाया गया। समग्र क्षेत्रों पर छात्रों का मध्यमान छात्राओं से अधिक पाया गया।
8. पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 1 माता स्वीकारोक्ति पर व्यक्त राय के आधार पर शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। शहरी विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों पर ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा माताओं की स्वीकारोक्ति अधिक होती है।
9. पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 2 पिता स्वीकारोक्ति पर व्यक्त राय के आधार पर शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इस क्षेत्र पर शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया।
10. माता एकाग्रता क्षेत्र पर शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। माता एकाग्रता क्षेत्र पर शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक पाया गया।
11. पिता एकाग्रता क्षेत्र पर शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। पिता एकाग्रता क्षेत्र पर शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक पाया गया।
12. माता अस्वीकारोक्ति क्षेत्र पर व्यक्त राय के आधार पर शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के प्राप्तांकों पर प्राप्त मध्यमान में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। माता अस्वीकारोक्ति क्षेत्र पर ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान शहरी विद्यार्थियों से अधिक पाया गया।
13. पिता अस्वीकारोक्ति पर व्यक्त राय के आधार पर शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के प्राप्तांकों पर प्राप्त मध्यमान का अन्तर सार्थक नहीं पाया गया। ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों पर शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा पिता अस्वीकारोक्ति अधिक पाई गई।
14. पारिवारिक सम्बन्ध सूची के समग्र क्षेत्रों पर व्यक्त राय के आधार पर शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के प्राप्तांकों पर प्राप्त मध्यमान का अन्तर सार्थक नहीं पाया गया। समग्र क्षेत्रों पर शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक पाया गया

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल, राम नारायण, "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन व मूल्यांकन", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
2. *एलिस, आर.एस. (1951), एजुकेशन साइकोलॉजी।*
3. *भाटिया, निर्मल (1978), "शिक्षा में मनोविज्ञान के सिद्धान्त और प्रविधियाँ" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*
4. *भटनागर, सुरेश (1985), "शिक्षा मनोविज्ञान", राजकमल प्रकाशन दिल्ली।*
5. *भटनागर, सुरेश (1980), "शिक्षा में मनोविज्ञान", इण्टर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।*
6. *भार्गव, ऊषा, किशोर मनोविज्ञान।*
7. *गेरेट गेनरी (1978), 'शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी', कल्याण पब्लिकशनर्स।*
8. *जायसवाल, सीताराम (1967), "शिक्षा मनोविज्ञान", राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।*
9. *क्रो एण्ड क्रो (1965), "एजुकेशन साइकोलॉजी"।*
10. *शर्मा, आर.ए. (1990), "शिक्षा तकनीकी" लॉयल बुक डिपो, मेरठ।*
11. *शर्मा, गणपत राय, व्यास, अधिगम और विकास के मनोसामाजिक आधार हरिशचन्द्र।*
12. *वर्मा, डॉ. रामपाल सिंह, शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान 2002 उपाध्याय, प्रो. राधा विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा वल्लभ।*
13. *वर्मा, प्रीति, श्रीवास्तव, डी. मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*
14. *वाजपेजी, एस.आर., सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण।*
15. *व्यास, हरिशचन्द्र, कैलाश शिक्षण अधिगम एवं विकास का मनोविकास सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।*
16. *चैहान, एस.एस. (1995), उच्च शिक्षा मनोविज्ञान विकास, नई दिल्ली पब्लिशिंग हाउस।*